सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, सितम्बर-अक्तूबर, 2010

एक महत्वपूर्ण तोहफ़ा

इसलिए मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि यीशु शापित है। और न पवित्र आत्मा के बिना कोई यह कह सकता है कि यीशु प्रभु है। (2 कुरिन्थियों 12:3)

झूठी शिक्षा के प्रभाव से बच निकलने के लिए सहायक, यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है। पवित्र आत्मा के बिना, आप अपने दिल से यीशु को, प्रभु नहीं कह सकते हो। अगर आप अपने पूरे दिल से कहो, तो वह आपके प्रभु बनेंगे और आप उनके सेवक। वह आपके पूरे व्यक्तित्व पर इतना नियंत्रण पायेंगे कि आपकी सेवकाई एक उच्च स्तर पर पहुँचेगी। आपके प्रयास फलदायक बनेंगे जो बहुत लोगों तक पहुँचेगे।

एक अध्यापिका कई संजीवन सभाओं में भाग लेने के सिलसिले के बाद पश्चाताप करते हुए

पृष्ठ 2 पर ... *एक महत्वपूर्ण तोहफ़ा*

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

ETC TV ***चैनल पर***

हर ***शनिवार सुबह 7:00*** *से* ***7:30*** *बजे*

अपने सर्व-सामर्थी उद्धारकर्ता पर विश्वास

"यद्यपि तुम इन बातों को पहले से ही जानते हो तथा उस सत्य में जो तुम्हारा है स्थिर भी किये गए हो, तथापि मैं तुम्हें इनका स्मरण दिलाने के लिए सदैव तैयार रहूँगा।" (2 पतरस 1:12)

हमें अपने विचारों, योजनाओं और चाल-चलन में परमेश्वर के साथ कैसे चल रहे हैं, इन सभी बातों का मूल्यांकन करना आवश्यक है। मैं देखता हूँ कि बहुत अधिकतर लोग विश्वास को सीखने और विश्वास में चलना नहीं सीख रहे हैं। हमें अपने सम्पूर्ण-पर्याप्त उद्धारकर्ता पर विश्वास रखना चाहिए। हम उन पर यह कर भरोसा रखें कि "जहाँ कहीं कोई मार्ग नहीं है, वहाँ आप मेरे लिए मार्ग बनाएंगे, और आप मेरे आगे-आगे चलेंगे, "एक परिवर्तित व्यक्ति के हृदय में आत्मविश्वास होता है और वह जानता है कि परमेश्वर उसका परित्याग नहीं करेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि मेरे पाठक उन सभी तरीकों को, जिसमें हमारे बहुमूल्य परमेश्वर ने आपको उन सभी विपत्तियों और जीवन के निर्णायक क्षणों में छुड़ाया है, रिकार्ड रखे होंगे। इन सभी बातों को हमें अवश्य याद रखना है। हमारा कृत्घन हृदय की प्रवृति यह है कि बड़ी आसानी से वह परमेश्वर की कृपा को भूल जाता है। <u>हमारा विश्वास हमारे विचारों पर आधारित है।</u> भय और अविश्वास का विचार, सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर सर्वानाशी प्रभाव डालता है और आपको परमेश्वर की उत्तमता के मार्ग से हटा करता है।

जब आप परमेश्वर के पवित्र वचन को पढ़ेंगे और उसे लेकर प्रार्थना करेंगे, तब वह आपके उच्च विचारों और विश्वास को सक्रिय कार्यों में बदल देगा। बाइबल इस बारे में बताता है "वर्तमान सत्य में स्थापित हो।" कई लोग उस सत्य को दृढ़ता से थामने में असफल हो जाते हैं जिसे वे जानते है। और शैतान अचानक ही लोगों में यह भावना पैदा करता है कि वे जीवन की उन आश्चर्य जनक चीजों के अभाव का अनुभव कर रहें हैं जिनका उनके मित्र और रिश्तेदार आनन्द उठा रहे हैं। शैतान के विचारों को भगाने और सुझाव देने के बदले वे उन विचारों को अपने मन में कुछ समय तक बने रहने के लिए स्थान देते हैं। जल्दी ही अंधकार उन्हें भर देता है और उनकी परमेश्वर के साथ सहभागिता टूट जाती है। इस तरह के लोगों के लिए, खोई हुए जगह पर वापस लौटना और सत्य की विश्वस्त जगह को पुनः पाना और सत्य की आज्ञाकारिता में, दीन होना

पृष्ठ 1 से ... *सर्वसामर्थी उद्धारकर्ता पर विश्वास*

और यह स्वीकार करना कि उन्होंने परमेश्वर के पवित्र आत्मा को दुःख पहुँचाया है, परमेश्वर की महिमा की हानि की है, एक महान बात है। हम कभी भी सोचते हुए या इन पापों से दूर होने के लिए पश्चाताप करते नहीं दिखते। परमेश्वर के पास इसे सुधारने का मार्ग है। आप की यह इच्छा हो कि इसे दृढ़ता से पकड़े रहें। परमेश्वर के वचन का अध्ययन मुझे इन उच्चत्तम स्वर्गीय बातों के लिए लालायित कर मुझे उत्कंठा से भर देता है।

मेरी पत्नी, शायद ही उन अभावों की चर्चा करती है जिनसे वह गुजरी थी। घर पर मेरे संक्षिप्त और लम्बे अनुपस्थिति में उन्हें बच्चों की देखभाल करनी पड़ती थी और कई मुश्किल परिस्थितियाँ आ खड़ी होती थी जिन्हें मैं बहुत कम जानता हूँ। उनमें से एक घटना मुझे याद आयी। एक अवसर पर जब उनके पास बच्चों के भोजन के लिए पैसे नहीं थे, उन्होंने गली में चिल्लाने की आवाज सुनी। यह आवाज एक छोटे कबाड़ी वाले की थी जो बोतल और पुराने डिब्बे खरीदता था। उनके पास बेचने के लिए कुछ खाली डिब्बे थे। वह कबाड़ी वाला, जो एक गरीब आदमी था, उन वस्तुओं के बदले कुछ छोटे सिक्के दिए। परन्तु परमेश्वर ने उसे कैसे भेजा! उन थोड़े से पैसे से उस दिन उसने बच्चों के खाने की व्यवस्था हुई। यद्यपि बहुत सालों तक हमारे घर में फ्रिज नहीं था। बहुत ही कम में हमने संतुष्ट और खुश रहना सीखा है, यह ध्यान में रखते हुये की बहुत से लोगों के पास इससे भी कम मात्रा में सुविधायें उपलब्ध है।

मेरे लड़कपन मे, घर में पुराने अखबार को बेचने में मैं माँ की सहायता करता था जो थोड़ा सा पैसा मिलता, उससे रसोई घर में चूलहा जलाने के ईंधन के इंतजाम के लिए इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन कभी भी कोई कुड़कुड़ाहट नहीं होती थी। या हम अपने खाते-पीते रिश्तेदारों या दूसरों से किसी तरह की मदद नहीं मांगते थे। यह सच्चाई परमेश्वर ने हमें सिखायी कि उनकी प्रतिज्ञाएं ही हमारी सम्पति (खजाना) है। अब परमेश्वर ने सेवा के लिए बहुत विशाल क्षेत्र दिया हैं, जब हम खोए हुओं तक पहुँचने के लिए मंहगे साधनों का प्रयोग कर रहे हैं, जैसे टेलीविजन और रेडियो सेवायें। मैं नहीं जानता आप किस तीव्रता से प्रार्थना कर रहे हैं और लाखों लोगों की आत्मा का बोझ महसूस कर रहे हैं जिनके पास आशा और उद्धार का संदेश पहुँचाया जा रहा है। परमेश्वर से प्रार्थना का बोझ मंगिए जो सच्चाई से आपके विश्वास को परमेश्वर के वचन में प्रतिबिम्बित करता है।

– जोशुआ दानियेल।

पृष्ठ 1 से ... *एक महत्वपूर्ण तोहफ़ा*

परमेश्वर को खोज मे लगी थी। आधी रात के समय अचानक वह तहेदिल से उनको प्रभु कह कर पुकारने लगी। इससे वह बहुत आनन्द से भर गई। सिर्फ अपने होठों से आप उनको प्रभु कह सकते हो। इससे आपको कोई सन्तोष नही मिलता। अगर वह सचमुच 'प्रभु' हैं, तो आप एक अलौकिक व्यक्ति बन जाओगे। आप में प्रेम की एक नई आत्मा भर जायेगी, जो अपने सृष्टिकर्ता के लिए अपने आपको खर्च करने के लिए आपको मजबूर करेगी।

यदि आप केवल अपने पैसों, शिक्षा या रिश्तेदारों को अपना कहके सिर्फ उन्हीं से लिपटे न रहो, तो आप में एक नया अनुग्रह आयेगा। परमेश्वर आपको, अपना वरदान देंगे। आप उन सारी आशिषों को पाने के योग्य रहोगे। मगर उन सारी आशिष को पाना आपके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। यह दिखाने के लिए कि आप उनके चुना हुए सेवक हो, वह आपको कुछ आत्मिक वर देते हैं। आपके लिए जो भला है, वह आप परमेश्वर को ही चुनने देना। हर तरह के वरदान को माँगना अच्छी बात नही है। सब से महत्वपूर्ण वरदान तो यीशु मसीह है। उनकी आशा करो। जब परमेश्वर आपको वरदान देते है तो वह ऐसा होगा कि परमेश्वर आपको गुमराह होने से बचाएंगे।

"मैं यहोवा हूँ, यही मेरा

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

नाम है, मैं अपनी महिमा दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरी है उसे खुदी हुई मूर्तियों को न दूंगा।" (यशायाह 42:8) "अपने निमित्त, हाँ, अपने ही निमित्त मैं यह करूँगा। मेरा नाम क्यों कर अपवित्र ठहरे? मैं अपनी महिमा दूसरे को नहीं दूंगा।" (यशायाह 48:11) परमेश्वर की महिमा को छूना हमारे लिए खतरनाक है। एन प्रेस्टन एक मुर्गी को मान देना चाहती थी। जब वह बीमार थी, परमेश्वर ने, अण्डों के लिए उस मुर्गी का इस्तेमाल किया था। वह उस मुर्गी को पहचान नहीं पायी। उसने प्रार्थना की कि उस मुर्गी को पहचानने में परमेश्वर उनकी सहायता करे। 'मैं ने ही उस मुर्गी की सृष्टि की, मैं अपनी महिमा दूसरे को ना दूंगा।" ऐसा कहकर परमेश्वर ने उससे बात की।

जब आपके घर में आपका कोई बच्चा बीमार हो जाता है, हालाँकि आप में चंगाई करने का कोई वरदान नहीं है, फिर भी उस बच्चे को चंगा करने के लिए परमेश्वर आपका इस्तेमाल कर सकते है। सारे वरदान पवित्र आत्मा के आधीन में है। फिलिप्पुस में इथियोपिया देश के एक बड़े अफ़सर से निडरता से बात करने का साहस था। वह दौड़ कर रथ के आगे पहुँच गया। सन्त पौलुस का वह बहुमुखी ज्ञान, उनको परमेश्वर द्वारा दिया गया था। अगर आप ऐसी वीरान जगह पर फेंक दिये जाओ, जहाँ आपको असाधारण आत्मिक शक्ति की ज़रूरत है तो परमेश्वर वह शक्ति भी आपको देंगे।

पूरी तरह से समर्पित जीवन, परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से निर्देशित जीवन है। परमेश्वर के लिए आपका जीवन अत्यंत बहुमूल्य है। हमारे बीच में कोई आपसी प्रतिस्पर्धा नही हैं, वह इसलिए कि हर एक के लिए अपना-अपना काम है। हम में से हरेक यीशु जैसा बन सकते है। हर कोई अपने क्षेत्र में विशिष्टता पायेंगे। हर एक तारे का अपना ही वैभव है। परमेश्वर हमको भी सम्मान देंगे। मगर हम सम्मान पाने के लिए परमेश्वर का काम नहीं करें। हमेशा हम उनकी महिमा की खोज में रहे और उनकी इच्छा पूरी करें। अगर परमेश्वर आपसे यह काम छोडकर दूसरा करने के लिए कहे तो आप तैयार रहें। आप में से हर एक मेरे लिए प्रार्थना करें। मैं हमेशा यही प्रार्थना करता हूँ कि जो काम परमेश्वर ने मुझे दिया उसकी ओर ध्यान न देकर मैं शापित ना बनूँ। परमेश्वर ने आपको जिम्मेवारी का एक सौभाग्य पूर्ण स्थान दिया है। आप नहीं जानते कि भविष्य में परमेश्वर आपको किस जगह उपयोग करेंगे। उनमें आप के लिए गौरवपूर्ण स्थान है। आप मसीह की देह हो।

परमेश्वर हमेशा स्तुति के योग्य है, निन्दा के नहीं। परमेश्वर हमेशा चाहते है कि वह अपनी आशिषों को हम पर उन्डेले। मगर हमारी थैली छेदों से भरी है और आशिषें ठहर नही पातीं। इसलिए परमेश्वर, सबसे पहले हमारे व्यक्तित्व को बनाना चाहते है। अपने अनुशासन में लाना चाहते है ताकि हम उनकी आशिषों को संभाल पाये और चारों तरफ दूसरों के लिए उदाहरण बनें। विश्वास योग्य परमेश्वर जिनका स्वभाव विश्वस्तता है और प्रेममय परमेश्वर जिनका स्वभाव प्रेम है वह कभी अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं जा सकते। "...तुम स्वयं भलाई और समस्त ज्ञान से परिपूर्ण हो तथा एक दूसरे को चिताने के योग्य भी हो।" (रोमियों 15:14) जो हम से बात-चीत करते हैं वे इस अनुभव के साथ वापस लौटें की हम में भलाई है। हम उनको चितायें, तब भी उनको हम में भलाई नजर आये। भलाई, आत्मा का एक फल है।

हम बहुधा गलत करते है और हमें सुधार की ज़रूरत है। हम में से कुछ लोगों को पूर्ण ज्ञान नहीं है। जो अभी-अभी प्रभु में आये है अपनी शक्ति का गलत अन्दाजा लगाते है और जल्द ही घमंड से भर जाते है। इस तरह वे कई गलतियाँ कर बैठते है। प्रेम से धीरज पूर्वक उनको सुधारना आवश्यक है। उनको हम में भलाई नजर आये। "हम में से प्रत्येक अपने पड़ोसी को प्रसन्न करें कि उसकी भलाई और उन्नति हो।" (रोमियों 15:2) क्या आपके जरिये लोग उन्नति पा रहे है? आप अपने पड़ोसी को भलाई से उन्नति पहुँचाने के लिए हमेशा तैयार रहें।

हमारी सहभागिता पवित्र रहे। हम में

सत्य की परख !

याह की स्तुति करो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा का भय मानता है; जो उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है। उसका वंश पृथ्वी पर प्रतापी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशिष पाएगी। (भजन संहिता 112:1,2)

कोई गुस्सा, द्वेष, और ईर्ष्या के लिए स्थान ना हो। इनके कारण सबकुछ नाकाम हो जाता है। अंततः हम में सिर्फ भलाई रहे। हम सब अपने-अपने स्थानों पर इस तरह काम करें कि जब लोग हमें देखें तो हम में यीशु को देख पायें। जब आप परमेश्वर के काम में हाथ बटा रहे हो, तो आप यह देख पाओगे की परमेश्वर आपके सारे कार्यों में आपके साथ हैं। जितना गहरे रूप से आप उनके कार्यों में मग्न हो, अपने रिश्तेदारों को जिनसे आप प्यार करते हो, उनको परमेश्वर के लिए जीतने में आप उतने ही सामर्थी बन जाओगे। नाश होते किसी संबन्धी के लिए यदि आप दुःखी हों, तो परमेश्वर उसका जरूर ध्यान देंगे। अपने पूरे दिल से परमेश्वर की सेवा करो। खुशी का यही राज है। यहोशू ने यह पाया। "परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करूँगा।" परमेश्वर आपकी हर बात में रुचि रखते है। "जो तुम्हें छूता है वह मेरी आंख की पुतली को छूता है।" (जकर्याह 2:8) उनकी दिलचस्पी और प्रेम का यह कितना जोरदार और भावुक बयान है।

-- एन. दानिय्येल।

आशिष से पहले सताव

द्वितीय विश्व युद्ध मानव जाति पर असमान दुख साथ लाया। विशेषज्ञ अनुमान लगाते है कि करीब पचपन करोड लोग मारे गये होंगे। उनमें से अन्दाजन छः करोड लोग यहूदी ही होंगे जो बंदी शिविर में मृत्यु के घाट उतरे है। कई परिवार और कई देश उजाड गये है। साफ-साफ यह एक बहुत भयानक बुराई का समय था।

मगर सब कुछ बुरा तो ना था। युद्ध के दौरान चिकित्सीय अनुसंधान बड़ा तेज़ हो गया। बीमारी और संक्रामक रोगों के निवारण के लिए शोध ज़ोरों पर था। और उनको महान सफलता भी हासिल हुई। उदाहरण स्वरूप, सन् 1941 तक रोग के फैलने को रोकने में वे असमर्थ थे। स्टीवेनसन स्वॉनसन लिखते है,"ज्यादा कुछ नहीं कर पाते थे सिवाय यह की बिस्तर के बाज़ू में खड़े हो कर बेख़बर लोक में उतरते रोगी को सिर्फ सांत्वना दें।"

मगर युद्ध ने अमेरिका और इग्लैण्ड देशों को, वह अद्भुत दवा, असली पेन्सिलिन को भारी पैमाने पर बनाने के रास्तों को तलाशने में मजबूर किया। हालाँकि सन् 1928 में ही अलग्जेंडर फ्लमिंग ने पेन्सिलिन की खोज की थी, मगर चिकित्सीय वैज्ञानिकों ने इस के साथ कुछ खास नही किया। "सूक्ष्म जीव - विज्ञान का एक दिलचस्प चमत्कारक विषय कह कर उस को नजर अंदाज किया गया।"

मगर जब की सन् 1930 के अंत तक महा युद्ध होने की संभावना बढती गयी तो यह सब माहौल बदल गया। तत्परता से परिशोधन करने शुरू किये। उस समय सिर्फ कम मात्र में ही पेन्सिलिन को बनाया जाता था। मगर इग्लैण्ड ने अधिक मात्रा में बनाने के तरीके की खोज की।

सन् 1941 में इग्लैण्ड के कुछ वैज्ञानिक पेन्सिलिन के नमूने, अमेरिका में लाये। उनके एक दल ने 'पोरिया' इल्लिनोइस, में कृषि-विज्ञान की एक प्रयोगशाला में उसे अधिक मात्रा में बनाने के विषय में प्रयोग शुरु किये। चार महीनों के अन्दर-अन्दर, उन्होंने दस गुना अधिक पेन्सिलिन उत्पादन करने का तरीका ढूंढ निकाला। औषधीय कंपनियों को यह प्रक्रिया का अनुज्ञास किया गया। तत्पर उसका उत्पादन शुरू हुआ।

संसार का पहला ऐनटि-बायोटिक (प्रतिजैविक औषध), पेन्सिलिन के (खमीर उठाने का) किण्वक विधान के आविष्कार से औषधी कंपेनीयों में कई दूसरे प्रतिजैविक औषधों को बनाने की दौड़ शरु हुई। जल्दी ही रट्जर्स विश्वविद्यालय के सेलमान वाक्संमन ने एक और प्रति जैविक स्ट्रेप्टोमैसिन का खोज किया। इससे क्षय रोग का निवारण होता है। इस तरह एक के बाद एक प्रतिजैविक औषध बनाते गये। और सन् 1990 के मध्य तक लगबग सौ से भी अधिक ऐन्टि-बायोटिक्स का आविष्कार किया गया।

शिकागो के नॉर्त वेस्टार्न मेडिकल स्कूल में औषध-विज्ञान के प्रोफेसर और संक्रामक रोगों के वैद्यनिपुण डॉ ग्यारी नोस्किन कहते है, "औषध विज्ञान के आविष्कारों में सब से, प्रतिजैविक औषध का आविष्कार शायद, मानव जाति के लिए महत्व पूर्ण हित का कारण बना है।"

द्वितीय विश्वयुद्ध में करोड़ों लोग मर गये; फिर भी उस के कारण कई औषधों का आविष्कार हुआ जिससे करोंडों को बचाया गया और बचाते रहेंगे। डॉ. रस्सल मॉलिट्ज जो एक वैज्ञानिक इतिहासकार और फिलडेल्फिया मेडिकल कॉलेज और हानमन युनिवर्सिटी के प्रोफेसर है, कहते है "चिकित्सीय-विज्ञान के लिए युद्ध एक बदचलवाली नौकरानी जैसी है।"

जैसे विश्वयुद्ध-2 के दौरान बुराई में से अच्छाई निकल आई, वैसे ही परमेश्वर हमारी जिन्दगी के दुखद घटनाओं से भी विशेष भलाई लाने में सामर्थ है।

परमेश्वर के लिए कोई कमज़ोर नहीं

डि. एल. मूडी, औपचारिक शिक्षण नहीं पाये थे। उनकी लिखी चिट्ठियों में, (उनमें से कई अभी तक बचाकर सुरक्षित रखे गये है) व्याकरण की बहुत-सी गलतियाँ रहती थीं। वे दिखने में भी इतने आकर्षक नहीं थे। उनका स्वर भी उच्च और मानो नाक से बोलते थे। इन सब कमियों के बावजूद दो महाद्वीपों को हिलाने में, परमेश्वर ने उनका इस्तेमाल किया!

ब्रिटेन में आयोजित मूडी की महा सभाओं का ब्योरा लेने एक समाचारपत्र ने अपनी संवाददाता को वहाँ भेजा। वहाँ अमीर और गरीब एक समान परमेश्वर की तरफ फिर रहें थे। इस संवाददाता को जानना था कि उनकी ऐसी सामर्थ का क्या राज है? काफी जाँच-पड़ताल के बाद उन्होंने प्रतिवेदन दिया," मैंने मूडी में ऐसा कुछ खास नही देखा जो उनके महान कार्यों का आधार दिखाई पड़ता हो ।" जब मूडी ने यह रिपोर्ट पढ़ी, उन्होंने हँसी दबाई, "अरे चौंकते क्यों हो , इस महान संचलन का राज यही तो है। उस में ऐसा कुछ नहीं जिसका खुलासा किया जा सकता है। सिर्फ परमेश्वर का सामर्थ्य है। यह कार्य परमेश्वर की ओर से है, मेरा नहीं।"

सौंपा काम करें जो सामर्थ के पार,
तलाश करें वह गुप्त आनंद अपार।
इस तरह आपसे हो भलाई,
समझें आप में कुछ नहीं अच्छाई।
उन्ही को दे प्रशंसा बारंबार;
तभी मिले वह गुप्त आनंद अपार।

इस बात में एक महान आध्यात्मिक नियम छिपा है। जो परमेश्वर के लिए अपना श्रेष्ठ समर्पित करना चाहते है इस सिद्धान्त का पालन करने में माहिर बनें। परमेश्वर अपनी इच्छा पूरा करने के लिए, केवल प्रतिभाशाली और अत्यंत चतुर लोगों को ही इस्तेमाल करने में मजबूर नहीं है। पूरे इतिहास में परमेश्वर ने ऐसे लोगों को ही चुना और इस्तेमाल किया है, जिनकी कोई पहचान नहीं थी और जो नगण्य थे। वह इसलिए कि ऐसे लोग परमेश्वर पर असाधारण रूप से निर्भर रहते हैं। इससे परमेश्वर अपना अनोखा सामर्थ्य उनके जरिये बार-बार प्रकट कर सकते है। जब की वे अपने शून्यपन से संतृप्त है, परमेश्वर उनका सब कुछ बन सकते है। परमेश्वर संपन्न लोगों को तभी चुनकर उपयोग करते है जब वे अपनी काबिलियत और साधन-संपत्ति पर से अपनी निर्भरता हटा पाते है। परमेश्वर हमारी दुर्बलता और कमियों के बावजूद नहीं, उनके कारण ही वे हमारा उपयोग करते हैं। परमेश्वर हमारे शानदार प्रज्ञाओं और बेजोड़ योग्यताओं का तब तक इस्तेमाल नहीं करेंगे, जब तक कि हम इन चीजों को अपना आधार मानना नहीं छोड़ देते। अलौकिक दिव्य सामर्थ प्रदर्शित करने के लिए मानवीय कमजोरियाँ अत्यंत उचित पृष्टपट है।

परमेश्वर की यहीं योजना है कि मसीही धर्म के विषय में दुनिया यह जान पाये - व्यक्तिगत जीवन में हासिल सारे विश्वास की उपलब्धियाँ, कलीसिया का उद्देश्य और आगे बढ़ने का लक्ष्य - इनका विवरण किसी मानवीय क्षमताओं, सामर्थ्य, सद्गुण या काबिलियत पर आधारित नहीं है। "मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होता है।" (2 कुरिन्थियों 12:9) पौलुस के लिए परमेश्वर का यही संदेश है। "जब मैं निर्बल होता हूँ तभी सामर्थी होता हूँ।" यह पौलुस की गवाही है।

एल एस स्टिवार्ट लिखते है, "यह जानना रोमांचक है कि परमेश्वर हमेशा अपने राज्य का निर्माण मानवीय निर्बलताओं और आपमानों के बल पर ही करना चाहते है, उनकी शक्ति और आत्मविश्वास पर नहीं; और वे हमारी कमियों, सादगी और असहायपन इनके बावजूद नहीं, ठीक इनके कारण ही वे हमें उपयोग कर सकते है।" ऐसी कलीसिया या आत्मा को कुछ हरा नही सकता जो अपने सामर्थ्य नहीं बल्कि अपनी निर्बलता को परमेश्वर के सामने समर्पित करता है, ताकि वह उनका शस्त्र बने। फ्रान्सिस जेवियर, विल्यम केरी और पौलुस जो प्रेरित है उन सब का चुनिन्दा मार्ग यही है। यह ऐसी योजना है, जिस में हारने का सवाल ही नहीं। हमारी समस्या यह नहीं कि हम अत्यंत कमजोर है बल्कि यह है कि हम परमेश्वर के लिए अपने को अत्यंत बलवान मानते हैं।

- चुनीहुई।